नदी का निक्षेपण कार्य

निक्षेप के कारण

1. नदी के वेग में कमी-नदी के वेग में कमी कई कारणों से होती है :

(i) नदी के जलमार्ग ढाल में कमी-नदी के जलमार्ग ढाल

में कमी के कारण नदी की प्रवाह गति में निश्चय ही कमी आ जाती है।

जलमार्ग ढाल में कमी के कई कारण होते हैं। उदाहरण के लिए -

*** पटल विरूपण (diastrophism) के कारण नदी.**

के मार्ग में स्थल का नीचा होना या उसका एक तरफ झुक जाना।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

*** मु ख्य नदी के डेल्टा में विस्तार।**

*** नदी का ऊपरी भाग से नीचे की ओर पदार्पण।**

*** नदी के मार्ग में अधिक घुमाव का होना तथा**

*** अधिक अपरदन के कारण नदी का क्रमबद्ध अवस्था की ओर पदार्पण**

।

(ii) नदी के जल में अधिक विस्तार- जब नदी का जल अधिक दूरी में विस्तृत होकर प्रवाहित होता है तो निश्चय ही नदी का वेग क्षीण हो जाता है। संकरे मार्ग से प्रवाहित होने वाले जल का वेग अधिक होता है परन्तु जब वही जल अधिक विस्तृत भाग पर फैलकर बहता है तो नदी का वेग कम होता है। नदी के जल का विस्तृत होना कई बातों पर आधारित होता है-

- जब नदी पर्वतीय भाग से उतर कर निचले भाग में आती है तो ढाल में कमी के कारण जल अधिक दूरी में फैल जाता है, . * बाढ़ के समय सरिता का जल नदी के किनारों के ऊपर से होकर विस्तृत भागों में फैल जाता है।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

(iii) नदी के मार्ग में अवरोध- जब नदी के मार्ग में अवरोध उत्पन्न हो जाता है तो नदी का वेग कम हो जाता है। यह अवरोध कई रूपों में होता है। उदाहरण के लिए -.

* भूमिस्खलन (landslide) के कारण चट्टानों का भाग खिसक कर नदी के मार्ग में आकर बाँध के रूप में अस्थायी अवरोध उत्पन्न कर देता है,

CAREER FOUNDATION
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

* कभी-कभी नदियों के मार्ग में बालुका स्तूपों (sand dunnes) के निर्माण से अवरोध होता है,

* नदी के साथ बहते हुए लकड़ी के टुकड़े जब नदी की प्रवाह दिशा की आड़ी दिशा (transverse) में हो जाते हैं तो मार्ग में साधारण अवरोध हो जाता है,

* अचानक अधिक निक्षेपण से भी प्रवाह अवरुद्ध हो जाता है आदि।

(iv) नदी के जल के आयतन में कमी- जब अचानक या धीरे-धीरे नदी के जल की आपूर्ति कम हो जाती है तो आयतन में कमी आ जाने से नदी का वेग कम हो जाता है। यह सामान्य तथ्य है कि अधिक आयतन वाली नदी, तीव्र ढाल के साथ तीव्र वेग वाली होती है। नदी के आयतन में कमी अग्रलिखित कारणों से होती है—

* जलवायु में परिवर्तन के कारण वर्षा में कमी के कारण वाहीजल (runoff) में कमी,

*. शुष्क भागों में वाष्पीकरण द्वारा जल का विनाश,

*. निस्पन्दन (seepage- जल का नीचे रिसना) के कारण नदी के जल में ह्रास,

* सरिता अपहरण द्वारा नदी की सहायक नदियों के जल का अपहरणकर्ता नदी में चला जाना या मुख्य नदी के कुछ भाग का अपहरणकर्ता नदी में मिल जाना,

* मानव द्वारा नहर आदि के लिए नदी के जल का बड़े पैमाने में उपयोग,

* मुख्य नदी की मुख्य जलधारा का कई जलधाराओं में बंट जाने के कारण प्रत्येक जलधारा के आयतन में कमी तथा

CAREER FOUNDATION

* बाढ़ के चले जाने पर आयतन में अस्थायी कमी।

© Click on :- Career foundation

CAREER FOUNDATION
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

2. नदी में अवसाद भार की वृद्धि - जब नदी में परिवहन किये जाने वाले पदार्थों की मात्रा, नदी के परिवहन सामर्थ्य से अधिक हो जाती है तो नदी को अतिभारित नदी (over loaded stream) कहते हैं। ऐसी अवस्था में नदी अपने अतिरिक्त पदार्थों का निक्षेपण करना प्रारम्भ कर देती है।

निक्षेप द्वारा उत्पन्न स्थलरूप नदी के निक्षेप द्वारा विभिन्न प्रकार के स्थलरूपों का निर्माण होता है, जिन्हें रचनात्मक स्थलरूप कहते हैं। प्रमुख निक्षेपात्मक स्थलरूप निम्नलिखित हैं-

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

1. जलोढ़ पंख (alluvial fans)

2. जलोढ़ शंकु (alluvial cones)

3. बालुका पुलिन या बालुका तट (sand bank)

4. प्राकृतिक तटबन्ध (natural levees) या प्राकृतिक बांध (natural embankment)

5. बाढ़ का मैदान (flood plains)

6. डेल्टा (delta)

1.जलोढ़ पंख तथा जलोढ़ शंकु

जलोढ़ पंख सरिता द्वारा रचनात्मक स्थलरूपों में महत्वपूर्ण होता है तथा नदी की तरुणावस्था के अन्तिम तथा प्रौढ़ावस्था के प्रथम चरण का परिचायक होता है। नदियाँ अधिक अवसाद भार के साथ जब पर्वतीय ढाल के सहारे नीचे उतर कर समतल भाग में प्रवेश करती हैं तो उनके वेग में अचानक कमी आ जाती है। इस कारण चट्टानों के बड़े-बड़े टुकड़े से लेकर बारीक टुकड़े पर्वतीय ढाल के आधार पर पद के पास जमा हो जाते हैं, क्योंकि नदी की परिवहन शक्ति में कमी हो जाने के कारण इन पदार्थों का परिवहन नहीं किया जा सकता है। परिणामस्वरूप पर्वतीय ढाल के आधार तल के पास अर्द्धवृत्ताकार रूप में पदार्थों का निक्षेपण हो जाता है, जिसे जलोढ़ पंख कहते हैं। इन पंखों की संरचना इस प्रकार की होती है कि बारीक कणों का निक्षेप पंख के किनारे वाले भाग में होता है तथा बड़े कणों का जमाव पिछले भाग अर्थात् ढाल के पास होता है।

CAREER FOUNDATION

जलोढ़ शंकु में अंतर सिर्फ इतना होता है कि पंख से अपेक्षाकृत ऊंचा एवं ढाल इसका तीव्र होता है।

जलोढ पंख का निर्माण मुख्य रूप से दो स्थानों में होता है।

* पहाड़ी ढाल के निचले भाग में।

* ब्लाक पर्वत के अग्रभाग के सहारे जहाँ नदियाँ ऊपर से उतर कर सपाट मैदान पर प्रकट होती हैं।

© Click on :- Career foundation

CAREER FOUNDATION
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

2.प्राकृतिक तटबन्ध (Natural levees)

नदी के दोनों किनारों पर मिट्टियों के जमाव द्वारा बने लम्बे-लम्बे बन्धों को, जो कि कम ऊंचाई वाले कटक (low ridges)के समान होते हैं, तटबन्ध कहते हैं। चूँकि ये बन्ध प्रकृति द्वारा बनाये जाते हैं तथा इनसे बाढ़ के समय सुरक्षा होती है, अतः इन तटबन्धों को प्राकृतिक तटबन्ध (natural levees) कहते हैं। जलोढ़ पंख तथा डेल्टा के समान तटबन्ध नदी के सामान्य रचनात्मक स्थलरूप नहीं होते हैं अर्थात् ये प्रत्येक नदी में सदैव नहीं मिलते हैं। इस कारण जहाँ कभी भी प्राकृतिक तटबन्ध निर्मित हो जाते हैं, वास्तव में ये विचित्र स्थलरूप का प्रदर्शन करते हैं। तटबन्ध का निर्माण नदी द्वारा मलवा के निक्षेप के कारण होता है तथा इनकी उत्पत्ति सरल है। प्रत्येक नदी की घाटी के दोनों ओर किनारे होते हैं, जिनके बीच से होकर नदी प्रवाहित होती है। जब तक नदी अपने किनारों के बीच से होकर प्रवाहित होती है, वह अपने भार का वहन करती हुई सीधे रूप में चलती है। जब नदी अपने किनारों को पार कर लेती है (बाढ़ के समय) तो उसका जल फैलकर दूर तक बहने लगता। फलस्वरूप नदी के वेग में कमी के कारण निक्षेप होने लगता है। इस निक्षेप के कारण नदी के दोनों ओर कम ऊँचाई वाले बन्ध के रूप में

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

लम्बे-लम्बे कटक (law-ridges) का निर्माण हो जाता है। नदियों के जल के आयतन में अचानक वृद्धि होने पर जब तटबंध टूटते हैं तो फ्लैश बाढ़ आ जाती है। चीन की ह्वांगहो (यलो) नदी तली में लोयस की पीली मिट्टी का जमाव करती है। तटबन्ध के टूट से प्राय: भयंकर बाढ़ आ जाती है। इसी कारण से ह्वांगहो को 'चीन का शोक' (sorrow of China) कहा जाता है।

3.नदी डेल्टा

CAREER FOUNDATION

सामान्य परिचय — नदी द्वारा निर्मित रचनात्मक स्थलरूपों में डेल्टा का सर्वाधिक महत्व है। प्रत्येक नदी जब सागर या झील में गिरती है तो उसके प्रवाह में अवरोध एवं वेग में निहायत कमी के कारण नदी के मलवा का निक्षेप होने लगता है, जिससे एक विशेष प्रकार के स्थलरूप का निर्माण होता है। इस स्थलरूप को डेल्टा कहा जाता है। इस डेल्टा का नामकरण ग्रीक अक्षर 4 (डेल्टा) के आधार पर किया गया है क्योंकि इस रचनात्मक स्थलरूप का आकार प्राय: A अक्षर से मिलता है। सर्वप्रथम डेल्टा शब्द का प्रयोग नील नदी के मुहाने पर हुए निक्षेपात्मक स्थलरूप

© Click on :- Career foundation

CAREER FOUNDATION
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

के लिए हेराडोटस द्वारा किया गया था। बाद में सभी नदियों के मुहाने पर निक्षेप द्वारा निर्मित स्थलरूपों के लिए डेल्टा शब्द का प्रयोग किया गया। छोटे या बड़े आकार में प्राय: प्रत्येक नदी डेल्टा का निर्माण करती है। कभी-कभी डेल्टा का विस्तार बहुत अधिक होता है तथा यह हजारों वर्ग किलोमीटर तक होता है। इसके विपरीत कुछ नदियों का डेल्टा निहायत छोटा होता है। डेल्टा का जमाव तथ छोटा-बड़ा होना कई बातों पर आधारित होता है। इसका आगे उल्लेख किया जायेगा। डेल्टा में तलछट की गहराई सैकड़ों मीटर तक होती है। उदाहरण के लिए मिसीसिपी के डेल्टा की औसत मोटाई 2000 फीट तक है। डेल्टा के आकार में भी अन्तर होता है। कुछ धनुषाकार या चापाकार होते हैं तो कुछ पक्षियों के पैरों के समान होते हैं। कुछ अधिक लम्बे तथा संकरे होते हैं तो कुछ अधिक चौड़े होते है। डेल्टा नदी के अन्तिम भाग का वह समतल मैदान होता है, जिसका ढाल सागर की ओर होता है।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

© Click on :- Career foundation

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

डेल्टा के निर्माण की आवश्यक दशायें

> नदी का आकार तथा आयतन अधिक हो तथा उसका मार्ग भी लम्बा हो ताकि वह अपने साथ अधिक मात्रा में पदार्थों को परिवहन करके अपने साथ मुहाने तक ला सके। अवसाद भार की मात्रा के साथ ही साथ उसके पदार्थों की बनावट तथा आकार भी महत्वपूर्ण होते हैं, क्योंकि यदि महीन एवं बारीक कणों की ही अधिकता होगी तो वे नदी के वेग के साथ दूर तक सागर में चले जायेंगे तथा सागरीय जल के साथ ऊपर ही तैरते रहेंगे। इसके विपरीत यदि पदार्थ बड़े कणों वाले होंगे तो नदी के सागर में प्रवेश करते ही नीचे बैठने लगते हैं तथा डेल्टा के निर्माण में अधिक सहायक होते हैं।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

> मुहाने के पास नदी का वेग अत्यन्त मन्द होना चाहिए ताकि समस्त पदार्थ मुहाने के पास ही जमा होकर सुविस्तृत डेल्टा का निर्माण कर सकें।

> जिस सागर में नदी गिरती है, वहाँ पर सागरीय लहरों का वेग कम होना चाहिए। अन्यथा वेगवती लहरें निक्षेपित पदार्थ को काटकर अपने साथ बहा ले जाती हैं तथा डेल्टा का निर्माण नहीं हो पाता है।

> मुहाने के पास ज्वार की तरंगें निर्बल होनी चाहिए ताकि निक्षेपित पदार्थ को वे लौटते समय बहाकर न ले जा सकें।

डेल्टा की संरचना (structure of delta)— डेल्टा के पदार्थों का निक्षेपण एक निश्चित प्रक्रिया के अनुसार होता है.

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

1 बड़े-बड़े कण स्थल के पास होते हैं तथा महीन कण सागर की ओर होते हैं। जैसे-जैसे सागर की ओर बढ़ते जाते हैं वारीक कणों की अधिकता होती जाती है, यहाँ तक कि अधिक दूर जाने पर महीन कण जल पर ही तैरते हैं।

डेल्टा के मुख्य रूप से तीन स्तर पाये जाते हैं। डेल्टा के सबसे ऊपरी स्तर (bed) को उच्च निक्षेप या ऊपरी स्तर (top-set bed) कहते हैं। यह चौड़ा तथा मन्द ढाल वाला समतल मैदान होता है। यह सागर तल से थोड़ा ही ऊँचा होता है।

दूसरा स्तर अग्रस्तर (fore set bed) कहा जाता है। यह डेल्टा का सागर की ओर निकला हुआ भाग होता है। यह भाग खडे ढाल वाला होता है तथा सागर की ओर निकला रहता है।

अन्तिम स्तर को निम्न स्तर (bottom set bed) कहते हैं। यह डेल्टा का निचला भाग होता है जो कि सागर की तली पर बिछा होता है तथा दूर तक सागर में निकला रहता है।

डेल्टा की वृद्धि (growth of delta) - डेल्टा की वृद्धि कई बातों पर आधारित होती है। यदि नदी का वेग कम होता है तो अधिकांश मलवा नदी के मुहाने के पास ही बिछा दिया जाता हैं तथा डेल्टा की सागर की ओर मंद गति से बढ़ती है।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

इसके विपरीत यदि नदी का वेग अधिक होता है तो डेल्टा का आकार पतला किन्तु लम्बा होता है तथा बहुत दूर तक सागर में बढ़ता जाता है। डेल्टा के विस्तार पर सागरीय लहरों का भी पर्याप्त प्रभाव होता है। जहाँ पर लहरें अधिक सक्रिय होती हैं। वहाँ पर डेल्टा का अधिकांश मलवा लहरों द्वारा बहा लिया जाता है और डेल्टा का विस्तार मन्द गति से हो पाता है।

ये लहरें डेल्टा के आकार को भी प्रभावित करती हैं।

सागरीय धारायें यदि नदी के मुहाने पर प्रवाहित होती हैं तो डेल्टा के निचले भागों को अपनी दिशा की ओर मोड़ देती हैं। डेल्टा का सागर की ओर फिसलन द्वारा भी विस्तार होता है।

यदि डेल्टा का ढाल अधिक हो जाता है तथा डेल्टा यदि अधिक ऊँचा हो जाता है तो सागर की ओर वाले भाग फिसल कर सागर की ओर बढ़ते हैं जिससे डेल्टा का सागर की ओर विस्तार होता है।

प्राय: प्रत्येक नदी के डेल्टा में विस्तार होता है, परन्तु प्रत्येक डेल्टा के बढ़ने की गति में पर्याप्त अन्तर होता है।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

यह अन्तर इतना अधिक होता कि डेल्टा के बढ़ने के विषय में किसी सामान्य नियम का प्रतिपादन नहीं किया जा सकता है। चापाकार डेल्टा (arcuate delta) का विस्तार उसकी परिधि के सहारे सागर की ओर समान रूप से होता है, परन्तु उसका विसतार इस रूप में होता है कि उसके चाप का आकार सुरक्षित रहा है। नील नदी का डेल्टा, जो कि चापाकार डेल्टा का ही उदाहरण है, औसत रूप में प्रतिवर्ष 12 फीट की दर से सागर की ओर बढ़ता है। यदि पो नदी के डेल्टा के पिछले 830

CAREER FOUNDATION
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

वर्षों के अन्तर्गत विस्तार का अवलोकन किया जाय तो यहाँ प्रतिवर्ष डेल्टा का विस्तार 80 से 200 फीट के बीच रहा है। कोलकाता का बन्दरगाह पहले सागर तट पर था परन्तु वर्तमान समय में यह कई किलोमीटर तट से दूर आन्तरिक भाग में है। जो कि डेल्टा की वृद्धि का परिणाम है।

डेल्टा का वर्गीकरण

1. आकृति के अनुसार डेल्टा का वगीकरण

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

(i) चापाकार डेल्टा (arcuate delta) (iv) रुण्डित डेल्टा (truncated delta)

(ii) पंजाकार डेल्टा (bird-foot delta) (iii) ज्वारनद मुखी डेल्टा (estuarine delta)

(v) पालियुक्त डेल्टा या क्षीणाकार डेल्टा (lobate delta

2. विस्तार के अनुसार डेल्टा का विभाजन

(i) वर्द्धमान डेल्टा (growing delta)

(ii) अवरोधित डेल्टा (blocked delta)

1. चापाकर डेल्टा - इस प्रकार के डेल्टा का आकार वृत्त के चाप या धनुष के समान होता है। इसी से इसे धन्वाकार डेल्टा भी कहा जाता है। इसका विस्तार मध्य में सर्वाधिक होता है तथा दोनों किनारों की ओर यह कम होता जाता है। चापाकार डेल्टा का निर्माण उस समय होता है जब कि नदी की मुख्य धारा द्वारा पदार्थों का निक्षेप बीच में अधिक हो ताकि बीच का भाग निकला रहे एवं किनारे के भाग संकरे रहें। इस तरह की आकृति निश्चय ही एक धनुष के समान या पंखा के समान होती है, जिसका आकार अर्द्धवृत्ताकार होता है। चापाकार डेल्टा की लम्बाई बीच में सर्वाधिक होती है तथा किनारे की ओर कम होती जाती है, जैसा कि एक अर्द्धवृत्त का स्वभाव होता है। चापाकार डेल्टा को अर्द्धवृत्ताकार रूप सागरीय लहरों तथा धाराओं द्वारा भी प्राप्त होता है। चापाकार डेल्टा का सर्वोत्तम उदाहरण नील नदी का डेल्टा है, अतः इस प्रकार के डेल्टा को नील डेल्टा भी कहा जाता है। चापाकार डेल्टा का निर्माण बड़े कणों

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

वाले पदार्थों से होता है, जिसमें बजरी (gravel), रेत (sand) तथा सिल्ट की अधिकता होती है। प्रमुख चापाकार डेल्टा के उदाहरण अग्रलिखित हैं-गंगा का डेल्टा, राइन डेल्टा, नाइजर डेल्टा, ह्वांगहो (यलो) डेल्टा, ईरावदी डेल्टा, वोल्गा डेल्टा, सिन्ध डेल्टा, डेन्यूब डेल्टा, मीकांग डेल्टा, पो डेल्टा, रोन डेल्टा, लीना डेल्टा आदि। चापाकार डेल्टा की नदियाँ गुम्फित (braided) होती हैं। चापाकार डेल्टा एक प्रगतिशील डेल्टा का उदाहरण होता है जो कि प्रतिवर्ष सागर की ओर बढ़ता जाता है। इसके बढ़ने की गति भिन्न-भिन्न डेल्टा में अलग-अलग होती है। नील नदी का डेल्टा, चापाकार डेल्टा का वास्तविक उदाहरण है जो कि ग्रीक अक्षर Δ से मिलता है। इसी से प्रभावित होकर हेरोडोटस नामक विद्वान ने नदियों के मुहाने के निक्षेपात्मक स्थलरूप का नाम डेल्टा रखा था।

CAREER FOUNDATION

2. पंजा डेल्टा (bird-foot delta)- पंजा डेल्टा का निर्माण उन बारीक कणों से होता है, जो जल के साथ घोल के रूप में मिले रहते हैं तथा जिनमें चूने की मात्रा अधिक होती हैं। इनके निर्माण के लिए नदी का वेग कुछ अधिक होना चाहिए। नदी अपने साथ बारीक कणों वाले पदार्थों को लिए सागर में अधिक दूरी तक प्रवेश कर जाती है तथा सागरीय खारे जल के सम्पर्क में आने के कारण नदी के साथ लाये गये घोल के रूप में बारीक कण भारी होकर नदी के दोनों किनारों पर बैठने लगते हैं तथा कुछ समय बाद एक लम्बे डेल्टा का निर्माण करते हैं। इस डेल्टा के पदार्थ बहुत ही बारीक कण और रन्ध्रहीन (non-porous) होते हैं, अतः नदी का जल रिसकर नीचे नहीं रिसकर नीचे नहीं जा पाता है। परिणामस्वरूप नदी सागर में अधिक दूरी तक एक ही धारा के रूप में चलती है तथा अन्त में कुछ विभाग हो जाते है। परन्तु विचित्र तथ्य यह है कि प्रमुख धारा की शाखाएँ भी लम्बाई में ही अपने दोनों किनारों पर बारीक कणों वाले पदार्थों का निक्षेप करती हैं, जो कि मनुष्य के हाथ की अंगुलियों के समान निकले रहते हैं। इसी से इस प्रकार के डेल्टा को अंगुल्याकार डेल्टा भी कहा जाता है। इन्हें पंजाकार डेल्टा इसलिए भी कहते हैं कि इनका आकार पक्षियों के पैरों के पंजा से मिलता है। पंजाकार डेल्टा का सर्वोत्तम उदाहरण मिसीसिपी का डेल्टा है।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

3. ज्वारनदमुखी डेल्टा (estuarine delta) नदियों की एस्चुअरी के भर जाने से निर्मित लम्बे तथा संकरे डेल्टा को ज्वारनदीमुखी डेल्टा कहा जाता है। नदी के उस मुहाने को एस्चुअरी कहा जाता है जो कि जलमग्न होता है तथा जहाँ पर सागरीय तथा ज्वारीय लहरें नदी द्वारा निक्षेपित पदार्थों को बहा ले जाती हैं। यह मुहाना प्राय: : चौड़ा होता है। इस मुहाने में नदियाँ अपने मलवा का निक्षेपण करके उसे भरने का प्रयास करती हैं। फलस्वरूप एक लम्बे किन्तु संकरे डेल्टा का निर्माण होता है। इस तरह एस्चुअरी के भरने से उत्पन्न डेल्टा को ज्वारनदमुखी डेल्टा कहा जा सकता है। भारत में नर्मदा तथा तापी नदियाँ इस तरह का डेल्टा बनाती हैं। ज्वारनदमुखी डेल्टा के अन्य उदाहरण मैकेन्जी, ओडर, विश्चुला, एल्ब, सेन, ओब, हडसन आदि नदियों के डेल्टा हैं। इस तरह के डेल्टा में निमज्जित मिट्टी की शलाकाएँ (submerged bars), बाढ़ के मैदान या दलदली भाग मिलते हैं।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

4. रुण्डित डेल्टा (truncated delta)—नदी द्वारा निर्मित डेल्टा के आकार आदि में सागरीय लहरें परिवर्तन करती रहती हैं। कभी-कभी ये लहरें डेल्टा को काट छांटकर उसे बहा ले जाती हैं। इस कारण डेल्टा कटे-फटे रूप में ही रह जाता है। इस तरह के डेल्टा को भग्नाकार या रुण्डित डेल्टा कहते हैं।

5. पालियुक्त डेल्टा (lobate delta)—जब एक नदी की कई शाखाएँ अगल-बगल डेल्टा का निर्माण करती हैं तो मुख्य नदी द्वारा निर्मित डेल्टा का विस्तार रुक जाता है। इनके विपरीत, शाखाएँ लोब (पालि) के आकार में डेल्टा का निर्माण करती हैं इन्हें पालियुक्त डेल्टा कहते हैं। मुख्य नदी की अवरुद्ध गति वाले डेल्टा को क्षीणाकार डेल्टा कहा जाता है।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

6. वर्द्धमान डेल्टा (growing delta) – जब डेल्टा का सागर की ओर निरन्तर विस्तार होता है तो उसे प्रगतिशील डेल्टा कहते हैं। वर्तमान समय की अधिकाश नदियों के डेल्टा प्रगतिशील ही जैसे गंगा का डेल्टा, मिसीसिपी का डेल्टा आदि ।

CAREER FOUNDATION
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

7. अवरोधित डेल्टा (blocked delta)- जब डेल्टा का विस्तार रुक जाता है तो उसे अवरोधित डेल्टा कहते हैं। यह अवरोध सागरीय लहरों या धाराओं द्वारा उपस्थित हो सकता है।

8. परित्यक्त डेल्टा (abandoned delta) – जब नदी अपने पहले डेल्टा को छोड़कर अन्यत्र डेल्टा का निर्माण करती है तो पहले वाले डेल्टा को परित्यक्त डेल्टा कहते हैं। ह्वांगहो (यलो) नदी इस तरह के कई डेल्टा का निर्माण कर चुकी हैं। ह्वांगहो ने अपने प्रारम्भिक डेल्टा का निर्माण शाण्टुंग प्रायद्वीप के दक्षिण में किया था परन्तु इसका वर्तमान डेल्टा शाण्टुंग के उत्तर में है। गंगा-ब्रह्मपुत्र डेल्टा का पश्चिमी भाग, जो हुगली नदी द्वारा प्रवाहित होता है, परित्यक्त डेल्टा का उदाहरण है।

CAREER FOUNDATION
जनन राष्ट्र सेवा का

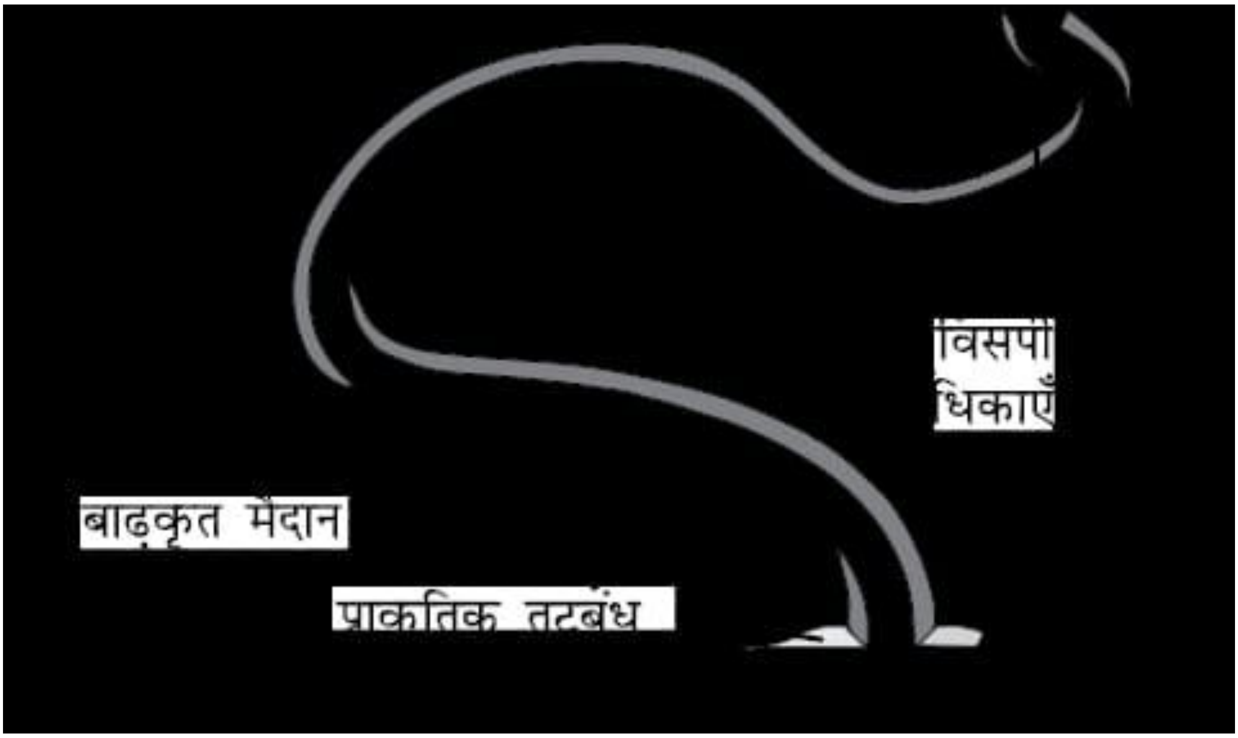

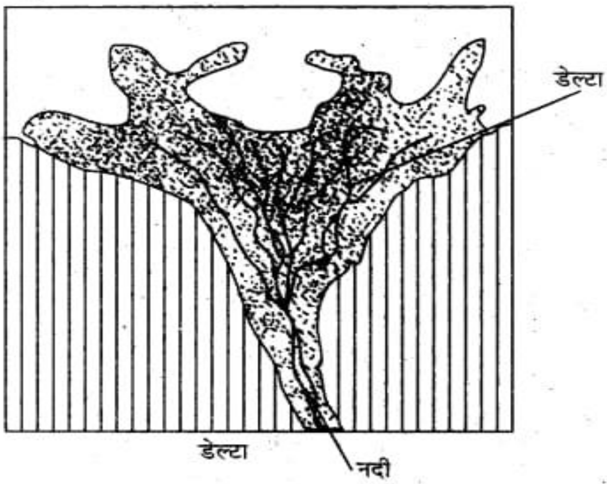

© *Click on :-* Career foundation

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888